Ashta Lakshmi Stotram in Sanskrit

Ashta Lakshmi Stotram – Sanskrit Lyrics (Text)

Ashta Lakshmi Stotram – Sanskrit Script

आदिलक्ष्मि

सुमनस वन्दित सुन्दरि माधवि, चन्द्र सहोदरि हेममये
मुनिगण वन्दित मोक्षप्रदायनि, मञ्जुल भाषिणि वेदनुते ।
□ङ्कजवासिनि देव सु□ूजित, सद्गुण वर्षिणि शान्तियुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, आदिलक्ष्मि □रि□ालय माम□॥ 1 ॥

धान्यलक्ष्मि

अयिकलि कल्मष नाशिनि कामिनि, वैदिक रू□िणि वेदमये
क्षीर समुद्भव मङ्गल रू□िणि, मन्त्रनिवासिनि मन्त्रनुते ।
मङ्गलदायिनि अम्बुजवासिनि, देवगणाश्रित □दयुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, धान्यलक्ष्मि □रि□ालय माम□॥ 2 ॥

धैर्यलक्ष्मि

जयवरवर्षिणि वैष्णवि भार्गवि, मन्त्र स्वरू□िणि मन्त्रमये
सुरगण □ूजित शीघ्र फलप्रद, ज्ञान विकासिनि शास्त्रनुते ।
भवभयहारिणि □ा□विमोचनि, साधु जनाश्रित □दयुते
जय जयहे मधु सूधन कामिनि, धैर्यलक्ष्मी □रि□ालय माम□॥ 3 ॥

गजलक्ष्मि

जय जय दुर्गति नाशिनि कामिनि, सर्वफलप्रद शास्त्रमये
रधगज तुरग□दाति समावृत, □रिजन मण्डित लोकनुते ।
हरिहर ब्रह्म सु□ूजित सेवित, ता□ निवारिणि □दयुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, गजलक्ष्मी रू□ेण □ालय माम□॥ 4 ॥

सन्तानलक्ष्मि

अयिखग वाहिनि मोहिनि चक्रिणि, रागविवर्धिनि ज्ञानमये
गुणगणवारधि लोकहितैषिणि, सप्तस्वर भूषित गाननुते ।
सकल सुरासुर देव मुनीश्वर, मानव वन्दित □दयुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, सन्तानलक्ष्मी □रि□ालय माम□॥ 5 ॥

http://devistotrams.blogspot.com/

विजयलक्ष्मि

जय कमलासिनि सद्गति दायिनि, ज्ञानविकासिनि गानमये
अनुदिन मर्चित कुङ्कुम धूसर, भूषित वासित वाद्यनुते ।
कनकधरास्तुति वैभव वन्दित, शङ्करदेशिक मान्यपदे
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, विजयलक्ष्मी परिपालय माम ॥ 6 ॥

विद्यालक्ष्मि

प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि, शोकविनाशिनि रत्नमये
मणिमय भूषित कर्णविभूषण, शान्ति समावृत हास्यमुखे ।
नवनिधि दायिनि कलिमलहारिणि, कामित फलप्रद हस्तयुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, विद्यालक्ष्मी सदा पालय माम ॥ 7 ॥

धनलक्ष्मि

धिमिधिमि धिन्धिमि धिन्धिमि-दिन्धिमि, दुन्धुभि नाद सुपूर्णमये
घुमघुम घुङ्घुम घुङ्घुम घुङ्घुम, शङ्ख निनाद सुवाद्यनुते ।
वेद पूराणेतिहास सुपूजित, वैदिक मार्ग प्रदर्शयुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, धनलक्ष्मि रूपेणा पालय माम ॥ 8 ॥

फलशृति

श्लो॥ अष्टलक्ष्मी नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि ।
विष्णुवक्षः स्थला रूढे भक्त मोक्ष प्रदायिनि ॥

श्लो॥ शङ्ख चक्रगदाहस्ते विश्वरूपिणिते जयः ।
जगन्मात्रे च मोहिन्यै मङ्गलं शुभ मङ्गलम ॥

http://devistotrams.blogspot.com/